1·2 परिभाषा

'Ethics' ग्रीक शब्द 'Ethica' से व्युत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ होता है रीति, प्रचलन या आदत। इसे नीति-विज्ञान (science of morality) भी कहा जाता है। 'morality' शब्द की उत्पत्ति 'mores' से हुई है। 'mores' का भी अर्थ है प्रचलन या रीति। अतः नीतिशास्त्र (ethics) का सम्बन्ध प्रचलन, रीति या आदत से है। रीति-रिवाज, प्रचलन या आदत मनुष्य के वैसे कर्म हैं, जिनका उसे अभ्यास हो गया है। ये सब मनुष्य के अभ्यास-जन्य आचरण हैं। मनुष्य की ऐच्छिक क्रियाओं को ही आचरण (conduct) कहा जाता है। यों तो क्रियाएँ विश्व के सभी पदार्थ, जीव या निर्जीव में होती हैं, पर सभी को आचरण नहीं कहा जाता। वैसी क्रियाएँ आचरण कही जाती हैं, जिन्हें किसी संकल्प या इच्छा से किया गया हो। मनुष्य की भी सभी क्रियाएँ ऐच्छिक नहीं होतीं; जैसे—छींकना, साँस लेना, आदि-आदि। तो नीतिशास्त्र (ethics) का सम्बन्ध ऐच्छिक क्रिया या आचरण से है।

आचरण का भी अध्ययन दो दृष्टियों से सम्भव है। एक तो यह कि मनुष्य का आचरण कैसा होता है—कैसे हम कोई काम करते हैं। दूसरे, इस दृष्टि से कि मनुष्य का आचरण कैसा होना चाहिए अर्थात् हमें कैसा काम करना चाहिए—हमारा कौन-सा आचरण उचित है और कौन-सा अनुचित। नीतिशास्त्र का सम्बन्ध आचरण के औचित्य और अनौचित्य से है। कैसे कर्म को उचित और किसे अनुचित कहा जाना चाहिए, यही इसकी समस्या है।

कर्मों के औचित्य-अनौचित्य को परखने के लिए कोई नियम आवश्यक है। बिना किसी मापदंड (नियम) के यह कैसे जाना जा सकता है कि अमुक कर्म कैसा है ? बिना किसी नियम के किसी भी पदार्थ का मूल्यांकन सम्भव नहीं है। किसी भी पदार्थ के सौन्दर्य को जब हम मापने लगते हैं तो 'सुन्दरता' के आदर्श की जो हमारी अवधारणा है उससे उसकी तुलना करते हैं। यदि वह पदार्थ उस मानसिक तस्वीर के अनुकूल होता है तो उसे सुन्दर कहते हैं और यदि विपरीत तो कुरूप। सौन्दर्य मापने में हमें सौन्दर्य-सम्बन्धी आदर्श, मापदण्ड या नियम की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार कर्मों के औचित्य-अनौचित्य को मापने के लिए एक नैतिक मापदण्ड, आदर्श या नियम की आवश्यकता है, जिससे तुलना करके यह कहा जा सके कि वास्तव में कौन से कर्म उचित या अनुचित है। यों तो सभी मनुष्य कर्मों के औचित्य-अनौचित्य का निर्णय कर लेते हैं, पर उन्हें उस नैतिक आदर्श का पता नहीं रहता, जिससे तुलना करके उन्होंने निर्णय किया है या वे उस नैतिक आदर्श की विवेचना नहीं करते। अतः नीतिशास्त्र का लक्ष्य है जीवन का वास्तविक आदर्श (ideal) क्या है या आचरण का नियम या मापदण्ड क्या है—इसकी मीमांसा करना। नीतिशास्त्र को इसीलिए उचित आचरण (right conduct) या आचरण के आदर्श

Scanned with CamScanner

(ideal in conduct) का विज्ञान कहा जाता है।[1]

मनुष्य का आचरण उसके चरित्र (character) पर निर्भर है। जैसा चरित्र है, वैसा ही मनुष्य का आचरण होता है। चरित्र मनुष्य के संकल्प करने के अभ्यास (habit of will) को कहा जाता है। चरित्र ही के कारण समान परिस्थिति में दो मनुष्यों का दो प्रकार का आचरण हो जाता है। मान लें कि दो विद्यार्थियों को किसी शिक्षक ने अमुक समय पर बुलाया। उसी समय वर्षा होने लगी। एक भींगता हुआ भी जाता है और दूसरा नहीं जाता। भिन्न आचरण भिन्न चरित्र के कारण हुआ। मनुष्य का आचरण, इसीलिए, उसके चरित्र को व्यक्त करता है। अच्छा आचरण उसी का होता है, जिसका चरित्र शुद्ध है। बुरे कर्म कलुषित चरित्रवाले करते हैं। चरित्र और आचरण का सम्बन्ध वृक्ष की जड़ और उसके फल के समान है। जैसी जड़ वैसा फल। इसलिए जब नीतिशास्त्र को उचित आचरण का विज्ञान कहा जाता है तो उसे चरित्र का विज्ञान भी कहा जा सकता है।

सारांश यह हुआ कि नीतिशास्त्र वह विज्ञान है; जिसमें मानव-आचरण के आदर्श की मीमांसा होती है, जिससे मनुष्य का कर्त्तव्याकर्त्तव्य और उसके कर्मों के औचित्य-अनौचित्य का ठीक-ठीक निर्णय किया जा सके। चूँकि आचरण का आधार चरित्र है, इसलिए इसे चरित्र-विज्ञान भी कहा जा सकता है।

1·3 नीतिशास्त्र का क्षेत्र

किसी विषय के क्षेत्र का अर्थ है उस विषय की सीमा अर्थात् वैसी समस्याएँ जिनका उस शास्त्र में अध्ययन तथा विमर्श होता है। अतः नीतिशास्त्र के क्षेत्र का अर्थ है वैसी समस्याएँ या विषय, जिनका नीतिशास्त्र में विचार होता है। कौन-कौन-सी समस्याओं से नीतिशास्त्र सम्बन्धित है?

नीतिशास्त्र में नैतिक चेतना के विषयों का अध्ययन किया जाता है, जैसे—उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ, धर्म-अधर्म आदि का विचार। मनुष्य की नैतिक चेतना-सम्बन्धी जितनी बातें हैं सभी विषय हैं, नीतिशास्त्र के। अतः निम्नलिखित विषयों पर ही नीतिशास्त्र में मुख्य रूप से विचार-विमर्श किया जाता है—

(i) नैतिक गुणों *(moral qualities)* **का अर्थ**—उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, गुण और दोष आदि का वास्तविक अर्थ क्या है ? नीतिशास्त्र में मुख्यतः इसी का विचार किया जाता है। मानव-आचरण का मूल्यांकन इन्हीं विचारों के द्वारा होता है। अतः इनका स्पष्ट अर्थ जान लेना आवश्यक है। समकालीन नैतिक चिंतक इसी को नीतिशास्त्र का प्राथमिक तथा मुख्य विषय विचारते हैं।

(ii) नैतिक निर्णय *(moral judgment)*—नैतिक गुणों का प्रयोग नैतिक निर्णयों में होता है। नीतिशास्त्र का सम्बन्ध नैतिक निर्णय से है। अतः नैतिक निर्णय का स्वरूप, उसका विषय, उसकी मान्यताएँ तथा नैतिक शक्ति के स्वरूप का अध्ययन भी नीतिशास्त्र के विषय हैं। नैतिक निर्णय का स्वरूप क्या है ? क्या अन्य निर्णयों की भाँति ही यह भी एक साधारण निर्णय है या

Scanned with CamScanner

इसकी कुछ विशेषताएँ हैं ? नैतिक निर्णय का वास्तविक विषय क्या है ? कौन-सी इसकी मान्यताएँ हैं ? नैतिक शक्ति कौन-सी है तथा उसका स्वरूप क्या है ? ये समस्याएँ नीतिशास्त्र की हैं।

(iii) नैतिक मापदण्ड *(moral standard)*—किसी निर्णय में किसी मापदण्ड की आवश्यकता होती है। इसीलिए नैतिक निर्णय में भी नैतिक मापदण्ड का ज्ञान आवश्यक है। अतः नैतिक मापदण्ड क्या है, उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ आदि की पहचान क्या है, वास्तविक आदर्श क्या है, आदि समस्याएँ नीतिशास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत हैं। नीतिशास्त्र का यही मुख्य विषय है।

(iv) नैतिक-पद्धति *(ethical method)*—सभी निर्णयों का अपना तरीका होता है। इसीको हम उस निर्णय की पद्धति कहते हैं। इसलिए नीतिशास्त्र में हमें यह भी विचार करना है कि नैतिक निर्णय की पद्धति क्या है ?

(v) कर्त्तव्य और नैतिकबद्धता *(duty and moral obligation)*—उचित-अनुचित, धर्म-अधर्म के विचार में कर्त्तव्य (duty) और नैतिक बद्धता (obligation) की चेतना भी निहित है। मनुष्य जिस कर्म को उचित समझता है, उसका पालन करना वह अपना कर्त्तव्य समझता है। वह उस कर्म को वास्तव में करे या न करे पर उसे वैसा ही करना चाहिए, ऐसी चेतना उसे होती है। वह एक प्रकार का बन्धन (binding) महसूस करता है। इसी बन्धन को नैतिक बद्धता (obligation) कहा जाता है। ठीक वैसे ही अनुचित कर्मों से दूर रहना मनुष्य अपना कर्त्तव्य समझता है। यहाँ भी वह अपने को उसी प्रकार का नैतिक बन्धन के अधीन अनुभव करता है। अब यह प्रश्न है कि कर्त्तव्य, नैतिक बन्धन आदि का वास्तविक अर्थ क्या है ? यह विमर्श नीतिशास्त्र का विषय है।

उचित कर्मों को पुण्य और अनुचित को पाप कहा जाता है। उन कर्मों के कर्त्ता को हम धर्मी या अधर्मी कहते हैं और उनके लिए उसे ही उत्तरदायी (responsible) ठहराते हैं। अनुचित कर्मों के लिए मनुष्य दोषी ठहराया जाता है। पाप और पुण्य किसे कहा जाता है, अधर्मी और धर्मी किसे कहना चाहिए, मनुष्य अपने कर्मों के लिए कैसे उत्तरदायी है, दोषारोपण क्यों होता है, इत्यादि समस्याएँ भी नीतिशास्त्र की हैं।

(vi) सद्गुण और दुर्गुण *(virtue and vice)*—उपर्युक्त विचारों से सम्बन्धित, सद्गुण (virtue) और दुर्गुण (vice) का विचार भी नीतिशास्त्र में होता है।

(vii) दंड और पुरस्कार *(punishment & reward)*—उचित-अनुचित के विचार के साथ दण्ड और पुरस्कार का विचार भी किया जाता है। अतः दण्ड और पुरस्कार का अर्थ और उनके सिद्धान्तों का भी नीतिशास्त्र में विचार किया जाता है।

(viii) नैतिक भावना *(moral sentiment)*—नैतिक निर्णय के साथ नैतिक भावना (moral sentiment) का भी प्रश्न उठता है। उचित या अनुचित कर्मों के साथ जो आनन्द और विषाद की अनुभूति होती है, उसे ही नैतिक भावना कहा जाता है। इसलिए उनका नैतिक निर्णय में क्या स्थान है, इसका विमर्श इसी शास्त्र में होता है।

(ix) नीतिशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है नैतिक आदर्श का निश्चयीकरण, जिसके द्वारा कर्मों का मूल्यांकन किया जा सकता हो। गौण रूप से नीतिशास्त्र का लक्ष्य विशेष कर्त्तव्यों का तथा विशेष परिस्थिति में मानव-चरित्र के विकास के नियमों का निरूपण भी है।

Scanned with CamScanner

(x) उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त नीतिशास्त्र का सम्बन्ध मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र से भी है। नैतिक नियमों का सम्बन्ध मानव-आचरण से है। नीतिशास्त्र में आदर्श आचरण के स्वरूप की विवेचना की जाती है। किसी भी वस्तु का आदर्श जानने के लिए उस वस्तु का स्वरूप जानना आवश्यक है। इसलिए मानव-आचरण के आदर्श को जानने के लिए आचरण का स्वरूप तथा उसके नियमों को जान लेना आवश्यक है। यह मनोविज्ञान का विषय है। अतः नीतिशास्त्र में आचरण के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का भी ज्ञान आवश्यक है। मनुष्य की ऐच्छिक क्रियाओं का मूल्यांकन नीतिशास्त्र में होता है, पर उनकी विधि तथा स्वरूप का ज्ञान मनोविज्ञान में मिलता है। आत्मा की अमरता, इच्छा-शक्ति की स्वच्छन्दता इत्यादि विषय तत्त्व-शास्त्र के हैं, पर नीतिशास्त्र उन्हीं पर अवलम्बित है। व्यक्ति का समाज से सम्बन्ध, समाज का विकास इत्यादि समस्याएँ समाजशास्त्र की हैं, पर नीतिशास्त्र भी उनसे सम्बन्धित है। व्यक्ति और राज्य का सम्बन्ध राजनीतिशास्त्र में बताया जाता है, पर यह सम्बन्ध किस आदर्श पर हो, यह नीतिशास्त्र का विषय है। इसलिए नीतिशास्त्र में भी इन विषयों पर एक दृष्टि डाली जाती है।

संक्षेप में नीतिशास्त्र के अन्तर्गत निम्नलिखित विषय हैं :—

(i) नैतिक गुणों के अर्थ का स्पष्टीकरण;
(ii) नैतिक निर्णयों के स्वरूप, विषय, मान्यताएँ तथा नैतिक शक्ति का विचार;
(iii) नैतिक मापदण्ड की विवेचना;
(iv) नैतिक पद्धति का विचार;
(v) कर्त्तव्य तथा दायित्व के संप्रत्ययों का स्पष्टीकरण;
(vi) सद्गुण तथा दुर्गुण के अर्थ का विश्लेषण;
(vii) दण्ड और पुरस्कार के सिद्धान्तों का अध्ययन;
(viii) नैतिक भावना का विचार;
(ix) विशेष कर्त्तव्यों तथा आचरण के विशेष नियमों का अध्ययन;
(x) कुछ मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं का विचार।

Scanned with CamScanner